चाँद ज़मीं पर उतरेगा
साजिद हाशमी 'साजिद'

चांद ज़मीं पर उतरेगा

साजिद हाशमी "साजिद"

किताब का नाम	:	चाँद ज़मीं पर उतरेगा
रचनाकार	:	साजिद हाशमी "साजिद"
सन् इशाअत	:	2012
क़ीमत	:	100 रू.
प्रकाशक	:	इन्तेसाब पब्लिकेशन सद्भावना मंच, सिरोंज
मिलने का पता	:	जी–18, नवीन कॉलोनी, राजगढ़ (ब्यावरा) जिला – राजगढ़

अपने लफ़्ज

बहुत ख़ुशी हो रही है अपनी सोच को एक संग्रह का रुप लेते हुए देखकर,मुझे वह वक्त याद आ रहा है, जब मैं अपने वालिद साहब जनाब "मुहम्मद हयात हाशमी साहब" मरहूम के पास बैठकर उनकी और उनके दोस्तों की शाइरी सुना करता था और ऐसे बहस मुबाहसों का हिस्सः हुआ करता था, वही मेरा पहला स्कूल था शाइरी का, वालिद साहब के इन्तक़ाल के बाद उनके कलाम को बार–बार पढ़ते हुए न जाने कब शाइरी का ये शौक मुझे हो गया ,हालांकि अदब की इस विरासत से बहुत दूर राजस्व विभाग की अपनी मसरुफ़ियत के बीच मेरे भीतर का शाइर कहीं खोने लगा था मगर जब मेरा तबादला हुआ राजगढ़ मे, जो मेरी और मेरे वालिद साहब की जा–ए–पैदाइश भी है ,यहां की आबो–हवा ने मेरे अंदर के शाइर को बेदार कर दिया ओर फिर शुरु हुआ वह सिलसिला जो, एक बयाज़ के रुप में ढल चुका है।

शाइरी के हर रुप को मैंने पढ़ा, मगर एक पैग़ाम देने वाली शाइरी मेरी पसन्द बनी,इसलिये अपने ख़यालो की अक्कासी अपनी शाइरी में करने की कोशिश की है।

वालिद साहब के बाद मैरे बड़े भाई साहब जनाब ज़ाहिद हाशमी साहब जिन्हें मैं वालिद का दर्जा देता हूँ, उन्होने हमेशा मेरी होस्लः अफ़ज़ाई की, उन्होने मुझे बार बार सुना और हमेशा मुझे सही समझ अता फ़र्माई ,वालिद साहब के हमराह रहे जनाब निसार अहमद साहब, धार ने भी मुझे और मेरे शोक को बढ़ावा दिया ,राजगढ़ की सरज़मीन में जहां अदबी माहौल बहुत ज्यादह नहीं है, एक पुरमसर्रत हवा की तरह जनाब के0के0 कुरेशी 'नाज़ा' साहब मुझे मिले जिन्होने मुझे बड़े भाई का प्यार देते हुए शाइरी का ऐसा शऊर बख़्शा जो मैं हमेशा याद रखूंगा। इस अवसर पर मैं अपने बचपन के दोस्त डा0 चन्दर सोनाने को भी बड़े अदब के साथ याद करता हूँ।

इस मजमुए को मंज़रे आम पर लाने में जनाब सैफी सिरोंजी साहब और अनिल अग्रवाल साहब सिरोंज का भी जो तआबुन मुझे मिला है, मैं उनका भी शुक्रिया अदा करता हूँ।

बहुत छोटी सी क़लम के सहारे से सवांरा गया ये 'मजमुआ' एक कोशिश है ,जिसे आप सबकी दुआओं की दरकार है ।

आपका

साजिद हाशमी'साजिद'

इन्तेसाब

अपने बड़े भाई जनाब ज़ाहिद हाशमी साहब के नाम, जिन्होंने हर–हर क़दम पर मेरी रहनुमाई की है।

–साजिद हाशमी

★

तारे सारे रक़्स करेगे चाँद ज़मीं पर उतरेगा,
अक्स मेरे मेहबूब का जब भी जल के अंदर उतरेगा!

उन नैनो में खुद को खोया, दिल डूबा ओर होश गए,
जिन नैनो की गहराई में एक समन्दर उतरेगा!

शहरे दिल के हर रस्ते पर दीप जलाए बैठा हूँ,
उनकी यादों का ये लश्कर मैरे घर पर उतरेगा!

वो आएं तो सारा आंगन सारा गुलशन महकेगा,
उनका जलवा ख़ुशबू बनकर गुल मे अक्सर उतरेगा!

दीवाना तो दीवाना है, क्या रस्ता ओर क्या मंज़िल,
पर अपने महबूब के घर ही ऐसा बेघर उतरेगा!

हम जैसे हैं ओर जहाँ हैं अच्छे अच्छे काम करें,
न हम नभ तक पहुंच सकेंगें ओर न अंबर उतरेगा!

घर छोटे हैं पर लोगो के दिल तो महलों जेसे हैं,
इस बस्ती मे इक न इक दिन ऐक सिकन्दर उतरेगा!

तुम सबसे अच्छे हो साजन ओर 'साजिद' को प्यारे हो,
रूप तुम्हारा अब कागज़ पर गज़लें बनकर उतरेगा!

★

उल्फत के जज़्बे को गाओ गीत में या चौपाई में,
ख़ुशबू तो ख़ुशबू होती है महकेगी पुरवाई में !

इक दिन ये खुशरंग बनेगी महका देगी गुलशन को,
प्यार की बेल लगाए रखना जीवन की अंगनाई में !

कुदरत की फ़ितरत को समझो हर इन्सां से प्यार करो,
अपना, अपनापन मत खोना दुनिया की चतुराई में !

साहिल पर सब कुछ पा लेना नामुमकिन है नामुमकिन,
मोती पाना है तो उतरो सागर की गहराई में !

रचनाकार छुपा होता है अपनी हर इक रचना में,
उसका अक्स दिखाई देगा जलवों मे रानाई में !

मज़लूमों का दर्द जो देखूँ, अपनी आँखें नम पाऊँ,
या रब ये तासीर अता कर, 'साजिद' की बीनाई में।

प्यार वफ़ा सदभाव की गजलें यूँ गाता हूं मैं 'साजिद',
हमदर्दी का भाव रहेगा, भारत की तरुणाई में !

★

न जादू हूँ न टोना हो गया हूँ
तेरी ख़ातिर खिलोना हो गया हूँ !

उन्हें पारस न कह दूं तो कहूँ क्या ?
जिन्हें छूकर मै सोना हो गया हूँ !

बढ़ा है जब से क़द ख्वाहिश का मेरी,
लगा है और बोना हो गया हूँ !

वो मुझसे दिल समझकर खेलते हैं,
ज़हे क़िस्मत खिलोना हो गया हूँ !

वो चल चल कर तमन्ना रोंदते हैं,
मैं बिछ बिछ कर बिछोना हो गया हूँ !

मुझे काता गया हालात के धर,
कभी मैं अधबिलोना हो गया हूँ !

मेरी ग़ज़लें ही तो साथी हैं 'साजिद',
वगरना ऐक कोना हो गया हूँ !

★

सोया हुआ नसीब जगाया ज़रुर है,
आंगन में फिर से बाग़ लगाया ज़रुर है !

शायद मेरा ख़याल हक़ीक़त मे ढ़ल सके,
आंखों में मैने ख़्वाब सजाया ज़रुर है !

जुल्मों सितम की धूप मेरे घर न आ सकी,
घर पे किसी बुजुर्ग का साया ज़रुर है !

किरदार है दिया, जो बुझाया न जाएगा,
ये जज़्बा आंधियों को बताया ज़रुर है !

वो आसमां पहुंच से बहुत दूर है मगर,
हाथों मे मैने संग उठाया ज़रुर है !

टूटा हुआ सा साज़ हे अरमान का मगर,
उसको भी मेहफिलों मे बजाया ज़रुर है !

कोशिश ये हे अ़रुज़े सुख़न को पकड़ सकूं ,
'साजिद' क़लम का पैंच लड़ाया ज़रुर है !

★

दिल तो हालात से बिस्मिल है, चलो प्यार करें,
प्यार करना बड़ा मुश्किल है, चलो प्यार करें !

अक्ल तो अहले सियासत के यहां गिरवी है,
अपना हमदर्द तो ये दिल है, चलो प्यार करें !

रंग ओर ज़ात के रस्ते मे उलझना ही नहीं,
प्यार इंसान की मंज़िल है, चलो प्यार करें !

चश्मे उल्फ़त से ज़रा देखिये सब अपने हैं,
हर तरफ़ प्यार की मेहफिल हे, चलो प्यार करें !

आओ नफरत के समन्दर से निकलकर देखो,
सामने प्यार का साहिल हे, चलो प्यार करें !

गीत उल्फ़त के हैं 'साजिद' तो ग़ज़ल इश्क़ की है,
अब सुखन प्यार को माइल हे ,चलो प्यार करें !

★

जब मुहब्बत की निगहबानी रहेगी,
हर तरफ महकार लासानी रहेगी !

चल पड़ो लेकर बुजुर्गों की दुआएं,
हर कठिन रस्ते पे आसानी रहेगी !

पास आने की करोगे जब भी चर्चा,
दूरियों की बात बेमानी रहेगी !

नफ़रतों के बीच अपना प्यार रख दो,
दर्द के ही पास दरमानी रहेगी !

जीत लोगे नफ़्स अम्मारः को 'साजिद'
तो फकीरी में भी सुल्तानी रहेगी !

★

बहुत छोटे हैं लेकिन अ़ज़्म का सौदा नहीं करते,
हैं हम जुगनू कभी महताब का दावा नहीं करते !

हम अपने जिस्म में ख़ुद नूर की तामीर करते हैं,
उजालों के लिये शम्मा का मुँह ताका नहीं करते !

बड़े हैं तो बड़े होंगे, हमें उनकी ज़रुरत क्या,
वो ऐसे पेड़ हैं जो राह में साया नहीं करते !

ज़रा तारीख़ तो देखो हमारी हम मुजाहिद हैं,
ब मौक़ा सरफ़राज़ी को कभी ज़ाया नहीं करते !

जो हैं किरदार के मालिक ग़मों में मुस्कुराते हैं,
ज़रा सी धूप में शबनम से उड़ जाया नहीं करते !

बस इक मुस्कान ही तो सैकड़ो खुशियों की ज़ामिन है,
वो खुश रहते हैं जो दूजो को तड़पाया नहीं करते !

तमाज़त झेलकर 'साजिद' हमेशा छांव देते हैं,
धनेरे पेड़ तपते हैं ,तड़पवाया नहीं करते !

★

जब भी चटटान मेरे अ़ज़्म से टकराई है,
अ़ज़्म टूटा नहीं वो आप ही थर्राइ है !

हर मुसीबत ने रखा है मेरी हिम्मत का भरम,
मेरी बर्दाश्त मेरी होसला अफज़ाई है !

बीच तूफां के परेशान मुझे मत समझो,
ये जो लहरें हैं मेरे अ़ज़्म की अंगड़ाई है !

आह से गीत का माहोल बना लेता हूं ,
दर्द की ज़र्ब मेरे वास्ते शहनाई है !

फिक्र के कोह बना लेना बड़ी बात नहीं,
है बड़ी बात जहाँ सोच में गहराई है !

है गज़ल में भी तेरा अ़क्स नुमायां 'साजिद',
तेरे अनवार से लफ़्ज़ो में भी रानाई है !

★

रहे जो बेकसो गुर्बा पे मेहरबां की तरह,
ज़मीं पे रह के भी होता है आसमां की तरह !

अदावतों के जहाँ में है, प्यार का गुलशन,
मेरा वतन है बयाबां में गुलसितां की तरह !

मैं बावजूद हूँ फिर भी मेरा वजूद नहीं,
हक़ीक़तें भी तो होती हैं दास्तां की तरह !

उठो के घूप में इंसानियत झुलसती है,
हर ऐक जुल्म पे छा जाओ सायबां की तरह !

हुई है बोझ की मानिन्द ज़िंदगी शायद,
अनेक लोग झुके हें किसी कमां की तरह !

जुबाँ मिली है तो 'साजिद' जुबाँ की बात करें,
जुबाँ के रहते रहें, कैसे बेजुबाँ की तरह !

✶

कुर्बान हो गया है किसी नाज़नीन पर,
यूं चाँद आज झांक रहा है ज़मीन पर !

उस माहताब से सभी तासीर छीनकर,
इक चांद आज और उगा है ज़मीन पर !

अच्छे तो और भी हैं मगर ऐ शिकस्तःदिल,
बाज़ी लगा रहा हूँ किसी बेहतरीन पर !

बादल गरज रहें हैं ये क्यूँ आसमान में,
बिजली न गिर पड़े कहीं पर्दानशीन पर !

अब तो ख़याल मैं भी मयस्सर नहीं उड़ान,
किसने चुरा लिये हैं हमारे हसीन पर !

कागज़ पे भी बिखरने लगी चाँद की किरन,
मैं गीत लिख रहा हूँ किसी मेहजबीन पर !

लफ़्ज़ो को गूंथ करके ग़ज़ल में पिरो लिए,
'साजिद' निसार गुल हैं ग़ज़ल की ज़मीन पर !

✶

नतीजा आज़माइश का कोई अच्छा नहीं होता,
जिसे अपना समझते हैं वही अपना नहीं होता !

नज़र आता है हर चेहरे के भीतर दूसरा चेहरा,
निगाहें देख लेती है सदा धोखा नहीं होता !

करें इंसा से इंसा प्यार तो फिर क्या परेशानी,
खुदारा काश ऐसा हो, मगर ऐसा नहीं होता !

ख़यालों में सदा रहता है जैसे भीड़ का आलम,
बज़ाहिर तो मैं तन्हा हूँ मगर तन्हा नहीं होता !

उसी का नूर है वरना रखा क्या है ज़माने में,
जिसे तुम देखते हो अस्ल में जलवा नहीं होता !

मेरे अशआर 'साजिद' एक अता हैं और इनायत हैं,
मैं वो लिख देता हूँ, पहले से जो सोचा नहीं होता !

★

फूल भी चुभ रहे ख़ार बन,
कितना बदला हुआ है चमन !

क्या हमारे यही लोग थे,
सोचता रह गया ये ज़हन !

कुछ नया रोज़ करने लगे,
चाल बदली गई या चलन !

साफ दिल के बिना कुछ नहीं,
गुस्ल हो या करो आचमन !

छांव बन कर मेरे पास आ,
अब अखरने लगी है तपन !

ख़ास हो बस तुम्ही ख़ास हो,
कह रहें हैं यही आमजन !

ओढ़नी जिसकी खीची गई,
है यकीनन किसी की बहन !

बस उसी की तो तारीफ है,
हम्द पढ़लो या गाओ भजन !

बाग़ तुझ पर निछावर करुं,
ऐ मेरे खूबसूरत सुमन !

आई 'साजिद' अता ए 'हयात',
मिल गइ शाइराना फबन !

★

कोई पूछे बहते जल से,
कैसा रिश्ता है बादल से !

खेतों में फसलों का सरगम
सुन लो अल्हड़ की पायल से !

अंबर है तो बहुत बड़ा पर,
छोटा है, मां के आंचल से !

पा लो आकर प्यार की धरती,
निकलो नफ़रत के दलदल से !

हिंसा का फल खाने वाले,
नावाक़िफ़ हैं इसके फल से !

सीखें शायद मिलकर रहना,
बस्ती वाले अब जंगल से !

ख़ामोशी सब कह देती है,
कुछ न होगा कोलाहल से !

पाओगे निश्चित शीतलता,
पहले छलको तो छागल से !

फिर से ताज़ा हो जाओगे,
फूटोगे जब भी कोंपल से !

अश्कों का रिश्ता है 'साजिद',
ज़हनो मे पलती हलचल से !

★

बेवफ़ा सब यहां बावफ़ा कौन है,
ख़ुद को लेकिन यहाँ जानता कौन है !

अ़क्स दर अक्स मुझमें छुपा कौन है?
मैं तो हूँ शख़्सियत आइना कौन है !

तेरे जल्वों से मअ़मूर है मेरा दिल,
पूजता हूं तुझे देखता कौन है !

मैंने माना बुरा हूँ पर इन्सान हूँ,
मुझको ये तो बता देवता कौन है !

जिस्म तो सो गया ख़्वाब में खो गया,
मेरे अंदर मगर जागता कौन है !

हम तुम्हारे बनें तुम हमारे बनो,
देखिये फिर हमें बांटता कौन है !

क़त्ल करना तो आसां बहुत है मगर,
रुक के ये सोच लें पालता कौन है !

मुझसे मिलता हुआ मुस्कुराता हुआ,
मुझमें 'साजिद' बसा दूसरा कौन है !

★

तर्के तअ़ल्लुक़ात में हैरत न कीजिये,
इस दौर मे हुज़ूर मुहब्बत न कीजिये !

हो हुक्मरां तो भूख को पहले दफ़ा करो,
रोटी न दे सको तो हुकूमत न कीजिये !

दिल साफ़ हो अगर तो यहां आइये ज़रुर,
कीना हो गर तो आने की ज़हमत न कीजिये !

अहले ख़ुलूस को तो सरों पर बिठाइये,
लेकिन कभी रकीक की इज़्ज़त न कीजिये !

है होसला तो क़ोम की इज़्ज़त बढ़ाइये,
वरना कभी दिखावे की हिम्मत न कीजिये !

हुस्ने सुख़न मे अपना क़लम कीजिये अलम,
'साजिद' ख़याल ए ख़ाम पे मेहनत न कीजिये !

★

बेवफा जिस रोज़ से अहले वफ़ा हो जाएगा,
ज़िंदगी का लम्हा लम्हा ख़ुशनुमा हो जाएगा !

जानता हूँ चाहते हो प्यार करते हो मगर,
तुम ज़ुबाँ से अपनी कह दोगे तो क्या हो जाएगा !

ख़ैर मक़दम को चली आएगी मंज़िल आप ही,
अपने क़दमो का निशां ही रहनुमा हो जाएगा !

अपनी बातों में ज़रा शीरीं बयानी धोल लो,
जो सुनेगा, जो मिलेगा, आपका हो जाएगा !

हौसला रखकर बढ़ाओ तो सही अपना क़दम,
बहते पानी में भी यारों रास्ता हो जाएगा !

जब कभी इख़लास से 'साजिद' करोगे शाइरी,
प्यार का जज़्बा तुम्हारा क़ाफ़िया हो जाएगा !

★

ऐसा है दस्तूर निराला दुनिया के गुलज़ारो का,
यूँ तो अक्सर फूल चुभे हैं नाम हुआ है ख़ारों का !

कोरे काग़ज़ पर फैली है अब जैसे ख़ूं की लाली,
सुर्ख़ नज़र आता है चेहरा रोज़ाना अख़बारों का !

क्या समझाएं क्या बतलाएं कोन समझने वाला है,
नासमझों की भीड़ लगी हे दौर गया हुश्यारों का !

ख़ालिक पे कुर्बा होने की रीत जहाँ में बाक़ी है,
इसमे कुछ तो हाथ रहा हे मंसूरी किरदारों का !

'साजिद' आओ मिल के हम तुम इक दूजे से प्यार करें,
नासमझों को भी समझाओ मतलब तो त्यौहारों का !

★

गुलशने ज़ीस्त मे इख़्लास का जोबन रखना,
घर बनाओ तो सदा सामने आंगन रखना !

गर जो पांवों मे नहीं हे तेरे पायल न सही,
हाथ मे अपने मगर प्यार का कंगन रखना !

शिद्दते धूप से तपता हुआ सहरा बनकर,
आ रहा हूं मैं मेरे वास्ते सावन रखना !

साफ़ कह दो के मुहब्बत ही हे ईमान धरम,
कोन चाहेगा दिमाग़ो मे ये उलझन रखना !

तोड़ना दिल का तो आसान रहा है लेकिन,
कितना मुश्किल हुआ करता हे कोइ मन रखना !

अब तो बच्चों ने भी हमसे न खिलोने मांगे,
कितना दुश्वार हे बचपन मे ही, बचपन रखना !

लफ़्ज़ दर लफ़्ज़ मिला माल से ज़्यादह 'साजिद',
मैरे मौला मेरे कशकोल मे ये धन रखना !

★

कोन कहता हे सहारा दीजिये,
दे सको तो हक़ हमारा दीजिये !

दुश्मनी देने से कुछ हासिल नहीं,
भाइयों को भाईचारा दीजिये !

दानापानी सब तुम्हारा है, मगर,
सांस लेने पर इजारा दीजिये !

चूमने दो मुल्क की मिट्टी हमें,
हम नहीं कहते सितारा दीजिये !

बाज़ुओं का हक़ भी तो पूरा करो,
बेसहारों को सहारा दीजिये !

नफ़रतें हों गर तो 'साजिद' कम से कम,
प्यार लेकिन ढेर सारा दीजिये !

★

दिल की बस्ती में वीरानियाँ देखकर,
कौन आएगा तन्हाइयाँ देखकर !

कामयाबी की ज़ानिब गए थे मगर,
लोट आए थे हम सीढ़ियाँ देखकर !

जैसे अरमान बेवा का दिल हो गए,
क्यूं तड़पते हें ये चूड़ियाँ देखकर !

छांव देने की ख़ातिर झुको तो सही,
सीख हासिल करो डालियाँ देखकर !

बस्तियां तो जलाते रहे हो मगर,
कांप जाते हो क्यों तीलियाँ देखकर !

मीठी बातों की जानिब तवज्जो रखो,
कुछ तो सीखो ज़रा चींटियाँ देखकर !

थोड़े तिनके तो 'साजिद' समेटे मगर,
ख़ोफ़ खाते रहे आंधियाँ देखकर !

★

एक पहलू ओर ख़्वाबे इश्क़ की ताबीर का,
दिल दिवाना हे तुम्हारी ख़ुशरवी तस्वीर का !

देख लेने से तरोताज़ा हुए हैं ज़हनो दिल,
नाम क्या रख्खूँ तुम्हारी जादुई तासीर का !

सिर्फ नज़रो से किया धायल मेरा पूरा वजूद,
काम करती है तुम्हारी आंख भी शमशीर का !

यूं गिरफ्तारी हुई के फिर रिहा न हो सके,
मैं तो काइल हो गया हूँ ज़ुल्फ़ की ज़न्जीर का !

शाइराना प्यार से टूटे हुए दिल जोड़ दो,
काम लो 'साजिद' ग़ज़ल से मुल्क की तअमीर का !

✶

जिसका जितना दाम हुआ है,
वो उतना नीलाम हुआ है !

कमज़र्फो के हाथ में जाकर,
शर्मिन्दा तो जाम हुआ है !

खामोशी से दिल टूटा था,
दुनिया मे कोहराम हुआ है !

तीरे नज़र का मैं ममनूँ हूँ,
ज़ख़्मी हो, आराम हुआ है !

गुमनामी में नाम गुमे हैं,
बदनामो का नाम हुआ है !

'साजिद' सच्चाई का सौदा,
ओने पोने दाम हुआ है !

✶

दुनिया ये भी भूल गइ है जानें क्या अनजाने कौन,
तस्वीरें धुंधली धुंधली हें आपस मे पहचाने कौन !

अक़्ल कहे नफ़रत फैलाओ, डाके डालो ऐश करो,
दिल कहता हे प्यार करो पर बेचारे की माने कौन !

प्रेम की मदिरा पीकर हम तुम कुछ ऐसे मदहोश हुए,
इतना भी न जान सके के तोड़ रहा पैमाने कौन !

हम सब जीवन के नाटक में ये माना किरदार बने,
सफ़हे हस्ती के काग़ज़ पर लिखता हे अफसाने कौन !

चाल फ़रेबों की बारिश में भीग रहें हैं, लोग मगर,
किरदारी छतरी है लेकिन इस छतरी को ताने कौन !

चाक गिरीबाँ कर डाला है ख़ाक लपेटे बैठा हूँ,
फिर भी दुनिया पूछ रही है होते हैं दीवाने कौन !

यूं तो सब खिड़की दरवाज़े बंद किए बरसों बीते,
चुपके चुपके फिर भी दिल में आता हे न जाने कौन !

'साजिद' बच्चा बन के देखा ख़ुद रुठे ख़ुद मान गए,
दुनिया में किसको फ़ुरसत है आएगा बहलाने कौन !

'साजिद' शाइर हो तो आओ हमदर्दी के गीत लिखो,
ये न सोचो, थे बस्ती मे आए आग लगाने कौन !

✶

जिसने बयां में झूठा हवाला नहीं दिया,
क़ुदरत ने उस ज़बान पे छाला नहीं दिया !

सूरज भी जैसे आज हिदायत पसंद हे,
खिड़की नहीं खुली तो उजाला नहीं दिया !

जो बिदअतों की गर्त में गहरे समा गए,
उनको समन्दरों ने उछाला नहीं दिया !

किरदार से गिरा तो गिरा फिर न उठ सका,
इस मर्ज़ ने किसी को संभाला नहीं दिया !

'साजिद' क़लम की रहबरी हर दोर में रही,
हर वक़्त क्या क़लम ने उजाला नहीं दिया !

✶

घर नहीं सायबान रखते हैं,
लोग ऐसा मकान रखते हैं !

वो चलाते हैं तीर नज़रों के,
आंख, जैसी कमान रखते हैं !

चीर देते हैं ज़हनो दिल अक्सर,
लोग ऐसी ज़बान रखते हैं !

सारी दुनिया आपकी होगी मगर,
हम भी हिन्दोस्तान रखते हैं !

जुल्म की बारिशें करो, कर लो,
दिल की छत मे ढलान रखते हैं !

सच को सुनना भी कम नहीं 'साजिद',
यूं तो बहरे भी कान रखते हैं !

★

सोच ग़ज़लो मे गर रही होगी,
फिक्र भी हमसफर रही होगी !

बेबसी जब से घर रही होगी,
आरजू दर बदर रही होगी !

जुल्म का कारवाँ गुज़रता है,
ज़ीस्त की रहगुज़र रही होगी !

आँख जलवों से हो गइ मअमूर,
उस नज़र पर नज़र रही होगी !

चैन आया चला गया मिलकर,
बेकली रातभर रही होगी !

ज़हनो दिल तो उधर रहा होगा,
बस मुहब्बत इधर रही होगी !

दर्द बरसा हे रात भर 'साजिद',
रात भर आँख तर रही होगी !

★

पल भर के वास्ते वो जो मेहमान हो गया,
इस आँख पे उस अश्क का अहसान हो गया !

जब जब किसी ग़ज़ल ने ज़हन में जनम लिया,
मेरा वजूद खिल के गुलिस्तान हो गया !

यादों को मेरी उसने यकायक जगा दिया,
ख़ामोशियों में फिर से घमासान हो गया !

महबूब मेरा जब से ख़फ़ा हो के चल दिया,
दिल का हसीन बाग़ बयाबान हो गया !

शहरे सुख़न की सोच मे पर्वान चढ़ गए,
'साजिद' तेरे ख़याल का दीवान हो गया !

★

शाम है, हिज्र है और ग़म है, चलो साथ चलें,
ज़िंदगी दर्द का मोसम है, चलो साथ चलें !

गर नहीं चाँद तो जुगनू ही तलाशे जाकर,
हर तरफ रात का आलम है, चलो साथ चलें !

आओ तदबीर से क़िस्मत की लकीरें बदलें,
वक़्त तो आज भी बरहम है, चलो साथ चलें !

फिर किसी ख़्वाब के क़दमो ने जगाया हे हमें,
फिर किसी याद की छमछम है, चलो साथ चलें !

रंग ओर ज़ात ज़बां सबसे चलो दूर चलें,
प्यार ही सबसे मुअज़्ज़म है, चलो साथ चलें !

सोच की राह में मेहताबे सुख़न है 'साजिद',
साथ मे फिक्र की माहम है, चलो साथ चलें !

★

सारे जहाँ में सबसे निराला है सिर्फ़ तू,
महबूब मेरे दिल का उजाला है सिर्फ़ तू !

आ जा ऐ चाँद देख ज़मीं पे भी चाँद को,
ये न समझ के ख़ूब रू वाला है सिर्फ़ तू !

चाहत भी मुन्तज़िर हे मुहब्बत भी मुन्तज़िर,
मेहबूब ऐसा चाहने वाला है सिर्फ़ तू !

कोई बुरी नज़र न तेरा जिस्म छू सके,
नाजुक बहुत हे नाज़ का पाला है सिर्फ़ तू !

मेरा वजूद तेरे बिना कुछ नहीं नहीं,
महबूब मेरी सांस की माला हे सिर्फ़ तू !

तेरे बग़ैर मेरी तो पहचान ही नहीं,
'साजिद' हूँ मैं तो मेरा हवाला है सिर्फ़ तू !

✶

आँखों से अश्कों की बातें बीत गईं,
आ जाओ अब तो बरसातें बीत गईं !

दर्द ग़ज़ल में ढ़ल के ऐसा पेश हुआ,
सुनते सुनते कितनी रातें बीत गईं !

घर का आंगन, लड़की का दिल सूना हे,
चितवत चितवत ही बारातें बीत गईं !

तेरी यादें उग आई हैं कोंपल सी,
मैं समझा था सारी बातें बीत गईं !

धीरे धीरे उसने दिल भी माँग लिया,
देते देते सब सौग़ातें बीत गईं !

उम्र बची है जो भी 'साजिद' नज़्र करो,
बरसो बरस की सब ख़ैरातें बीत गईं !

✶

निहाँ होने से डरते हैं अयाँ होने से डरते हैं,
बराबर चल रहें हैं कारवां होने से डरते हैं !

बलंदी से कहीं गिर के न चकनाचूर हो जाएँ,
ज़मीं वाले तभी बाआसमां होने से डरते हैं !

सितम की आंधियों मे ये कहीं परवाज़ न खो दे,
निशां वाले भी अक्सर बेनिशां होने से डरते हैं !

गुलों मे जाने कब से ख़ार की फितरत चली आई,
बयाबां भी तभी तो गुलसितां होने से डरते हैं !

छलक जाते हैं आंसू दर्द की मानिन्द आँखों से,
मगर ख़ामोश रहतें हें बयां होने से डरते हैं !

हक़ीक़त को बयाँ करने से पहले आजकल 'साजिद',
जुबां वाले भी अक्सर बाजुबां होने से डरते हैं !

✶

आज के दौर मे ऐसा भी तो होता है बहुत,
जो भी हंसता हे वही टूट के रोता है बहुत !

तंज़िया बर्क़ ने अहसास को धमकाया है,
सर पे जुल्मात का बादल भी तो गरजा है बहुत !

फूंक उल्फ़त का नगर लोग चलें हैं लेकिन,
भाईचारा पसे अंगार भी तड़पा है बहुत !

आप ही अम्न के ज़ामिन हैं सुकूं के पैकर,
महफ़िले जुल्म मे पर आपकी चर्चा है बहुत !

बूंद बा बूंद पिया सारा समंदर लेकिन,
लब पे खुश्की है बहुत आदमी तश्ना है बहुत !

रुठ के मुझसे चला आया है मेरा सब कुछ,
मैने उस शोख़ को जाते हुए देखा है बहुत !

सर पे रहने दो मुहब्बत के शजर का साया,
वक़्त की धूप में इस पेड़ का साया है बहुत !

ऐसा लिख्खो के ज़माने को बदल दो 'साजिद',
ये ज़रुरी है बहुत वक़्त की मंशा है बहुत !

✶

बात जो प्यार की चली होगी,
दोस्तों को बहुत खली होगी !

नाम रिश्तों का सुनके डरती हे,
कितने अहबाब ने छली होगी !

बात जो उनके मुंह से निकली हे,
वो यक़ीनन बहुत भली होगी !

ज़ीस्त का नाम तक नहीं लेती,
कैसे हालात मे पली होगी !

ख़िदमते फ़न अदब से हो 'साजिद',
तेरी तस्नीफ़ संदली होगी !

✶

हुस्ने अख़लाक़ पे कुछ ओर इजारा कीजे,
अपने दुश्मन को भी उल्फ़त से निहारा कीजे !

बेवफ़ाई के अंधेरे में उगाकर सूरज,
अपने किरदार से हर सम्त उजाला कीजे !

इतनी कमज़ोर हे नफ़रत से बनी ज़ंजीरें,
टूट जाएंगीं मुहब्बत को उभारा कीजे !

अपनी बस्ती में चली आएगी ख़ुद ही पूनम,
रुख़ पे सच्चाइ के चंदा को उतारा कीजे !

ग़म का ग़म छोड़िये खुशियों की ख़ुशी आने दो,
ज़िदगी को कड़ी मेहनत से निखारा कीजे !

साफ आएगी नज़र अपनी हर एक कमज़ोरी,
ख़ुद को आमाल के शीशे में निहारा कीजे !

गीत में धोल दो उल्फ़त की रवानी 'साजिद',
अपनी ग़ज़लों मे मुहब्बत को संवारा कीजे !

✶

ज़हन ताज़ा है दिल महका हुआ है,
कोई जैसे ग़ज़ल पढ़कर गया है ।

किसी की नींद से बोझल हैं पलकें,
किसी के घर मे कोई रतजगा है।

मेरा ख़ूने जिगर गर है नहीं तो,
तुम्हारे हाथ में किस की हिना है।

यक़ीनन है कोई मौसम की साज़िश
शजर की गोद से पत्ता गिरा है ।

नहीं करता मैं मंज़िल की तमन्ना,
मेरे पावों मे मेरा रास्ता है ।

तुम्हारे ग़म ने मेरी लाज रख ली,
खुशी से बारहा धोखा मिला है ।

किसी बूढ़े की पैशानी पे पढ़ लो,
खुदा ने झुर्रियों मे कुछ लिखा है ।

खुशी आती तो आख़िर कैसे आती,
मेरे घर मे अलम ठहरा हुआ है ।

मिला जब भाई से भाई का सीना,
ये मंज़र आंख को अच्छा लगा है ।

तू मुझको पस्तियाँ दे या बलंदी,
तेरा 'साजिद' तुझी पे छोड़ता है ।

★

मेरे धर में एक शजर था, ये भी तो तारीख़ हुई,
इस बस्ती में मेरा घर था, ये भी तो तारीख़ हुई,

खुद्दारी का एक समर था, ये भी तो तारीख़ हुई,
इन कांधो पर ऊँचा सर था, ये भी तो तारीख़ हुई,

ऐश ओ इशरत मालो दोलत अब ज़हनो पे हावी हैं
बच्चों को पापा का डर था, ये भी तो तारीख़ हुई,

नादां हो जो ढूंढ रहे हो इस दुनिया में अपनापन,
बस्ती बस्ती नगर नगर था, ये भी तो तारीख़ हुई,

तेरी राहें, तेरी गलियाँ, तेरा दर तो याद रहा,
'साजिद' का अपना भी घर था, ये भी तो तारीख़ हुई,

★

जोशो जुनूं न हाथ में सागर पसंद है,
हमको खुलूस वाला बिरादर पसंद है !

अपनी बिसात ठीक से पहचानते हैं हम,
जो जिस्म ढांक ले वही चादर पसंद है !

महलों की और देख के ललचा रहे हैं लोग,
छोटा सही मुझे तो मेरा घर पसंद है !

गुरबत के सर पे दस्ते अमीरी रहे सदा,
अपनी नज़र को यार ये मंज़र पसंद है !

चुल्लू नुमा वफ़ा पे इजारा नहीं पसंद,
हमको खुलूस वाला समन्दर पसंद है !

हर बार आ गई हैं वो मेहमान की तरह,
लगता हे मुश्किलों को मेरा घर पसंद है

जो ज़िदगी को अपनी ग़ज़ल में उतार दे,
'साजिद' हमारे दिल को वो शाइर पसंद है !

★

गीत के इक बदल की तरह आप हैं,
ख़ूबसूरत ग़ज़ल की तरह आप हैं !

आपसे इस गुलिस्ताँ में रोनक़ हुई,
ज़िंदगी मे कंवल की तरह आप हैं !

प्यार की नींव पे जगमगाते हुए,
ताज जैसे महल की तरह आप हैं !

ज़िंदगानी को जिसकी रही जुस्तजू,
ऐक ऐसे ही पल की तरह आप हैं !

मेरे दिल की ज़मीं पे मचलती हुई,
लहलहाती फ़सल की तरह आप हैं !

आप आए तो 'साजिद' को ऐसा लगा,
नेक कामों के फल की तरह आप हैं !

★

हर खुशी मुस्कान तो होती नहीं,
दर्द का दरमान तो होती नहीं ।

वक़्त आए तो लुटा दो जान भी,
दोस्ती आसान तो होती नहीं ।

इसमें दर दीवार भी रखिये ज़रुर,
ज़िंदगी दालान तो होती नहीं ।

साहिलों की साज़िशें होंगी ज़रुर,
मौज खुद तूफ़ान तो होती नहीं ।

तोड़ लेने पे तड़पती है बहुत,
ये कली बेजान तो होती नहीं ।

चंद ग़ज़लें फ़िक्र की 'साजिद' कहो,
शाइरी दीवान तो होती नहीं ।

✶

मेरे अरमां की ग़जल में यूं रवानी आ गई,
जैसे इक बैवा की बेटी पे जवानी आ गई ।

लिख रहा था मैं जहां भर से छुपा के अपना ग़म,
जाने कब कैसे कहां तेरी कहानी आ गई ।

मैंने तेरी याद को अपनी जबीं पे लिख लिया,
मेरी पैशानी पे तेरी भी निशानी आ गई ।

आपने नज़रे मिलाकर इस तरह से फैर ली,
यूं लगा के प्यार की रस्मे निभानी आ गई ।

आपका नज़दीक आना कुछ मुझे ऐसा लगा,
गर्म मोसम में भी जैसे रुत सुहानी आ गई ।

आपके आने से यूं मेहका हुआ है मेरा घर,
जैसे चम्पा और चमेली रातरानी आ गई ।

आजकल करने लगा हे आसमां की हमसरी,
इक पतंग जिस रोज़ से उसको उड़ानी आ गई ।

दिन के राजा को बिदा करते ही 'साजिद' यूं लगा,
पर अंधेरों के लिये रातो की रानी आ गई ।

✶

आपसी प्रेम ओर सम्मान बना रहने दो,
हम हें इंसान तो इंसान बना रहने दो !

मंदिरो मस्जिदो गिरजा की लड़ाई क्यूंकर,
सब हें गुल, देश को गुलदान बना रहने दो !

नफ़रतें हों तो पसे पुश्त उन्हें पहुंचा दो,
प्यार इस देश की पहचान बना रहने दो !

आ भी जाने दो यहां ताज़ी हवा के झोंके,
दिल के घर में कोइ दालान बना रहने दो !

वार करना हे तअस्सुब पे क़लम से 'साजिद',
ख़ुद को सदभाव का दीवान बना रहने दो !

✶

नाम अपने कोई तो निशानी करें,
आइये प्यार की तर्जुमानी करें !

अपनी साँसों से महकाएँ अपना चमन,
गर्म मोसम मे भी रुत सुहानी करें !

छोड़ माज़ी को तरतीब हो हाल की,
हुस्ने अख़लाक़ की ज़िदगानी करें !

इन निगाहों से चाहत का इज़हार हो,
हम ज़बानों से शीरीं बयानी करें !

इस अदब से अदब को मिले फ़ोक़ियत,
नाम इख़लास के हम कहानी करें !

अपनी ग़ज़लों की पहचान ही प्यार हो,
गीत 'साजिद' वफ़ा की मआनी करें !

✶

मकां कुछ ओर कहता तख़्तियाँ कुछ और कहती हैं,
हंसी चेहरों के पीछे सख़्तियाँ कुछ और कहती हैं !

बहू को भी वो बेटी मानते हैं सच सुना तुमने,
मगर कमरे से आती सिसकियां कुछ और कहती हैं !

खुले हैं उनके दरवाज़े ज़रुरतमंद की ख़ातिर,
मगर पीछे को खुलती खिड़कियाँ कुछ और कहती हैं !

करें मेहनत तो पाएगें मक़ाम ऊँचा सही लेकिन,
वहां पहुचाने वाली सीढ़ियाँ कुछ और कहती हैं !

अलग सबसे घरोंदा अपना पाकर खुश हुए थे हम,
मगर चर्खे कुहन की बिजलियाँ कुछ और कहती हैं !

जुनूं का दौर पीछे छोड़ आए हें मगर 'साजिद',
मेरे दामन की मुझसे धज्जियाँ कुछ और कहती हैं !

✶

किसी भी रंजो मुसीबत मे आह मत करना,
यूं ज़िदगी मे ग़मो को गवाह मत करना !

मिलें हज़ार सियाही क़ी दावतें लेकिन,
कभी भी क़ल्ब को अपने सियाह मत करना !

तुम्हें मिलेगा ग़रीबों की झोपड़ी में खुदा,
अमीर महलों में पाने की चाह मत करना !

जुबाने नर्म मिली हे नरम बयानी को,
दिलों को ठेस लगे ये गुनाह मत करना !

मुहब्बतों को दिलों में मुक़ीम कर लेना,
अदावतों को शरीक़े पनाह मत करना !

मेरी सलाह है 'साजिद' अदब भी कहता है,
बड़ो के सामने ऊँची निगाह मत करना !

✶

ढूंढिये हम में न हिन्दू न मुसलमानों को,
सिर्फ़ इंसान बना रहने दो इंसानों को !

कश्तियां अपनी कनारों पे पहुंच जाएंगी,
होस्लः पस्त बना देता है तूफ़ानों को !

दौरे हाज़िर में क्या ये चीज़ ज़रुरी न रही,
लोग क्यूं बैंच रहे हैं यहां ईमानों को !

इनमें कुछ संत महात्मा भी हुआ करते हें,
लोग पागल न समझ लें तेरे दीवानों को !

खुद को आईनें में देखा तो समझ में आया,
वरना मैं भूल गया था तेरे अहसानों को !

जज़्बए इश्क़ में वो आप जले हैं वरना,
शम्मा क्या ख़ाक जला सकती है परवानों को !

अपना ख़ूं दे के बढ़ाई है गुलो की रंगत,
हमने ऐसे भी संवारा है गुलिस्तानों को !

वक्त आया तो संभाली है भंवर में कश्ती,
हमने खामोश किया है कई तूफ़ानों को !

दो ओर दो पांच भी होने लगा अब तो 'साजिद,'
लोग झुठलाने लगे हैं तेरे मीज़ानों को !

हाथ को चूमूँ या पावों को दबाऊँ अम्मां,
किस तरह मैं तेरा अहसान उतारुँ अम्मां ।

मेरी आखों के दिये तेरे लहू से रोशन,
दिल ये कहता है हर इक लम्हा निहारुँ अम्मां ।

तेरे साये ने तमाज़त से बचाया है मुझे,
तेरी हर राह को पलकों से बुहारुँ अम्मां ।

इन रगो में जो लहू है वो हर इक बूंद तेरी,
अपनी हर सांस तेरे नाम पे वारुँ अम्मां ।

हां तेरे पांव के नीचे ही है जन्नत का मक़ाम
मैं तेरी गोद को क्या कह के पुकारुँ अम्मां ।

अपने अशआर मे मैं तेरी कहानी लिख्खूं,
अपनी ग़ज़लें तेरी अज़्मत पे निसारुँ अम्मां ।

मैं हूं 'साजिद' मेरे मसजूद का है हुक्म मुझे,
तेरी ख़िदमत में शबो रोज़ गुज़ारुँ अम्मां ।

जब मुहब्बत का कहा हो जाएगा,
ज़र्रा ज़र्रा चाँद सा हो जाएगा !

मुस्कुराएगा जो अहसासे यक़ीं,
सारा आलम ख़ुशनुमा हो जाएगा !

आँख में पहले समाओ तो सही,
ख़ुद दिलों का रास्ता हो जाएगा !

जब बदल जाएंगें मौसम ज़ीस्त के,
बेवफ़ा भी बेवफ़ा हो जाएगा !

ज़िदगी होगी बयाँ 'साजिद' अगर,
शेर जैसे आइना हो जाएगा !

★

दिवाना हो गया दुनिया में होश वाला भी,
सियाह दौर में गुम हो गया उजाला भी !

बसाने वालों में शामिल रहा था जो इंसा,
बना है आज वो बस्ती मिटाने वाला भी !

दिखाई ऐसी क़लाबाज़िया भी लोगों ने,
हुआ है हैराँ परीशाँ बनाने वाला भी !

अमीर लोगों को जब भूख की बड़ी शिद्दत,
ग़रीब लोग बने हैं यहाँ निवाला भी !

बढ़ी हैं प्यार मुहब्बत में तल्ख़ियाँ 'साजिद'
बदल गया है ग़ज़ल का सुनाने वाला भी !

★

ख़्वाब की ताबीर तुम हो,
इक हसीं तस्वीर तुम हो !

मालो ज़र का क्या करुँगा,
बस मेरी जागीर तुम हो !

नाज़ है क़िस्मत पे मुझको,
हां मेरी तक़दीर तुम हो !

मेरी हस्ती पर नुमायाँ,
ज़ीस्त की तहरीर तुम हो !

तुम में मै यूँ गुम हुआ हूँ,
आब मैं हूँ शीर तुम हो !

दर्द भी यकसाँ है 'साजिद',
आँख मैं हूँ, नीर तुम हो !

✶

चाहते हो अगर मख़मली ज़िंदगी,
जी सको तो जियो तुम भली ज़िंदगी !

ख़ुशबुएं अपने ज़हनों में पैदा करो,
पा सकोगे तभी संदली ज़िंदगी !

लोग क्या थे व पलभर में क्या हो गए,
तेरी जादूगरी देखली ज़िंदगी !

जगमगाती हैं जब ऐश से बस्तियां,
लड़खड़ाती है नाज़ो पली ज़िंदगी !

छेड़ती, गुदगुदाती, चिढ़ाती भी है,
कैसी नादान है मनचली ज़िंदगी !

देखो झुलसा दिया वक़्त की धूप ने,
थी हसीं ,हो गई, सांवली ज़िंदगी !

हमको 'साजिद' अदब ने सिखाया अदब,
जी रहे हैं अदब में ढली ज़िंदगी !

✶

पेशानी पे चंद लकीरें और ज़बां में छाले बस,
हमें मिलें हे सच के घर में ऐसे रहने वाले बस !

इनका बचपन, उनका बचपन जुदा जुदा हे कुछ ऐसे,
जेसे ये तो बोझ हुए हैं वो नाज़ो के पाले बस !

सूरज गुर्बा की कुटिया मे आने से भी डरता हे,
महलों में तो बैठ गए हें आ के सब उजियाले बस !

बोले भी तो क्या बोलेंगें ख़ामोशी से ही रो लेंगें,
मजबूरी ने डाल दिये हैं सबके मुंह पे ताले बस !

दिखता कुछ हे होता कुछ हे अंदर कुछ है बाहर कुछ,
बात चली तो हम कह बैठे गोरों को भी काले बस !

हीरा मोती सोना चांदी भी जेसे पकवान हुए,
इंसा अब इतना भूखा हे क्या क्या न वो खा ले बस !

अपने दिल की बात सुनाना 'साजिद' कितना मुश्किल है,
पागल दुनिया कह देती है शाइर को मतवाले बस !

★

कितने ज़ख्म ज़बां ने पाए तब लब पर आ पाया सच,
कुछ लोगों को बोझ लगे हे कुछ का हे सरमाया सच !

कितना बरहम कितना बदज़न कितना वो ख़ूँख़ार हुआ,
अनजाने मे उस ज़ालिम को जब हमने बतलाया सच !

सच के क़िस्से सच की बातें तारीख़ों मे दफ़्न हुईं,
अब हाथों मे मसलाया है पैरों से कुचलाया सच !

दिखता है पर अन्धों जैसी हरक़त इंसा करता हे,
नाबीना लगने लगता है जब उसको दिखलाया सच !

जाचो पर जाचें बिठलाइ हर दरवाज़ा बंद किया,
पूछ रहें हें अब लोगों से कैसे घर में आया सच !

शाइर की माशूक़ ग़ज़ल भी अब पैना हथियार हुई,
'साजिद' दुनियावी फ़ितरत ने जब उससे लिखवाया सच

★

दिल के ओराक़ पे हमने ये लिखा है अक्सर,
दर्द ही ज़ीस्त का उनवान रहा है अक्सर !

उनकी यादें हैं, तसव्वुर हैं, हज़ारों ग़म हैं,
फिर भी तन्हाई का अहसास रहा है अक्सर !

सब्ज़ पत्तों ने छुपाया हे तेरा अक्से हसीं,
सुर्ख़ फूलों से कोइ झाँक रहा हे अक्सर !

आ भी जाओ के अमावस को हे पूनम की तलब,
इसलिये मैनें तुम्हें चाँद कहा है अक्सर !

मैने गीतों में भी दीदार किया है उनका,
मैने ग़ज़लों मे उन्हें देख लिया है अक्सर !

यूँ तो दुनिया में हज़ारों से मिले हैं 'साजिद',
सिर्फ़ कुछ हैं के जिन्हें याद किया है अक्सर !

✶

न ख़ुशी है न कोइ मातम है,
ज़िंदगी का अजीब आलम है !

जो है क़ातिल वही क़तील भी है,
कितना दो रंग इब्ने आदम है !

कर रहा हूं ज़मीने दिल को तर,
आँख में आँसुओं का मौसम है !

गुफ़्तगू आपकी हुई है तभी,
दिल के आंगन में कोई छमछम है !

रुख़ तो है फूल सा मगर 'साजिद',
गाल पे आँसुओं की शबनम है !

✶

नफ़्स की जब से पुजारन हो गई,
ज़िंदगी जैसे भिखारन हो गई ।

माँग मे भरकर किसानो का सिंदूर,
गाँव की धरती सुहागन हो गई ।

बाप मुँह मांगी रक़म दे न सका,
एक बेटी फिर अभागन हो गई ।

जिंदगी तो जेठ की सूरत रही,
आँख लेकिन मिस्ले सावन हो गई ।

अपनी माँ के पांव 'साजिद' चूम ले,
और समझ ले ज़ीस्त पावन हो गई

मेरे हुज़ूर तसव्वुर में आइये बेशक,
मेरे वजूद पे बादल से छाइये बेशक !

फ़ज़ा में घोलिये सांसों से संदली राहत,
महक हैं आप तो खुशबू बसाइये बेशक !

नज़र तो आप की ख़ातिर बिछी ही रहती है,
नज़र की राह से दिल में समाइये बेशक !

चमन को दीजिये जल्वों से ख़ूबरु रंगत,
गुलों के बीच यहाँ मुस्कुराइये बेशक !

बग़ैर आपके मेरा कोई वजूद नहीं,
कभी तो मुझको भी मुझसे मिलाइये बेशक !

हयात अपनी ग़जल है, यही तराना है,
सुरो मे ढ़ालिये ओर गुनगुनाइये बेशक !

सुख़नवरों का ये 'साजिद' अहम फ़रीज़ा है,
वफ़ा के गीत जहाँ को सुनाइये बेशक !

दिल में जो हसरतो आलाम हुआ करते हैं,
इश्क़ में आपके ईनाम हुआ करते हैं !

बेच डाली है हयात हमने वफ़ा के बदले,
प्यार में ही तो यूँ नीलाम हुआ करते हैं !

इस तरह डूबते सूरज ने दिलासा पाया,
सुब्ह वाले ही सदा शाम हुआ करते हैं !

ख़ास लोगों पे ही बरसे हैं करम के बादल,
कुछ ही अश्ख़ास को ये आम हुआ करते हैं !

नाम से अपने जफ़ाओं को न कर वाबस्ता,
बद से बदतर तो ये बदनाम हुआ करते हैं !

बस मुहब्बत ही नहीं है मेरे जीने का सबब,
ज़ीस्त मे और कई काम हुआ करते हैं !

शाइरी भी तो इनायत है ख़ुदा की 'साजिद',
शेर बनते नहीं इलहाम हुआ करते हैं !

जब से उनकी नज़र हो गई, हो गई,
शाम जैसे सहर हो गई, हो गई !

कितना मुश्किल था साँसों का लंबा सफ़र,
आप आए गुज़र हो गई, हो गई !

दर्द कहता रहा ग़म सुनाते रहे,
इस तरह रातभर हो गई, हो गई !

वो बहारों की सूरत में क्या आ गए,
ज़िंदगी गुलमुहर हो गई, हो गई !

मुस्कुराकर जो पूछा गया हाले दिल,
दिल की हालत दिगर हो गई, हो गई !

गुलशने ज़ीस्त में आपकी आरज़ू,
ऐक लम्बा शजर हो गई, हो गई !

खुश्क शाख़ो में फूटी नई कोंपलें,
जब तवज्जो इधर हो गई, हो गई !

आप आये यहां और रहने लगे,
दिल की बस्ती नगर हो गई, हो गई !

जिस ग़ज़ल में वो 'साजिद' नुमायाँ हुए,
वो ग़ज़ल पुरअसर हो गई, हो गई !

हर जगह ख़ोफ़ो ख़तर हो ये ज़रुरी तो नहीं,
सबकी खुशियों मे बसर हो ये ज़रुरी तो नहीं !

नफ़रतों के लिये दुनिया में ठिकाने हें बहुत,
देश मेरा ही मगर हो ये ज़रुरी तो नहीं !

जान जनता ने भी इस देश की ख़ातिर दी हे,
सिर्फ नेता ही अमर हो ये ज़रुरी तो नहीं !

मैं बनाता हूं बनाऊँगा मुहब्बत के महल,
सोच में सबके खंडर हो ये ज़रुरी तो नहीं !

चंद सिक्कों के लिये थोड़ी खुशी की ख़ातिर,
हर कोइ दर से बदर हो ये ज़रुरी तो नहीं !

तेग़ रखते हैं उतारेंगे कई सर लेकिन,
अपने शानो पे भी सर हो ये ज़रुरी तो नहीं !

मेरे होटों पे भी थोड़ी सी हंसी आने दो,
हर खुशी आपके घर हो ये ज़रुरी तो नहीं !

कुछ दिमाग़ो में है नफ़रत का अंधेरा 'साजिद',
सारे ज़हनों में सहर हो ये ज़रुरी तो नहीं !

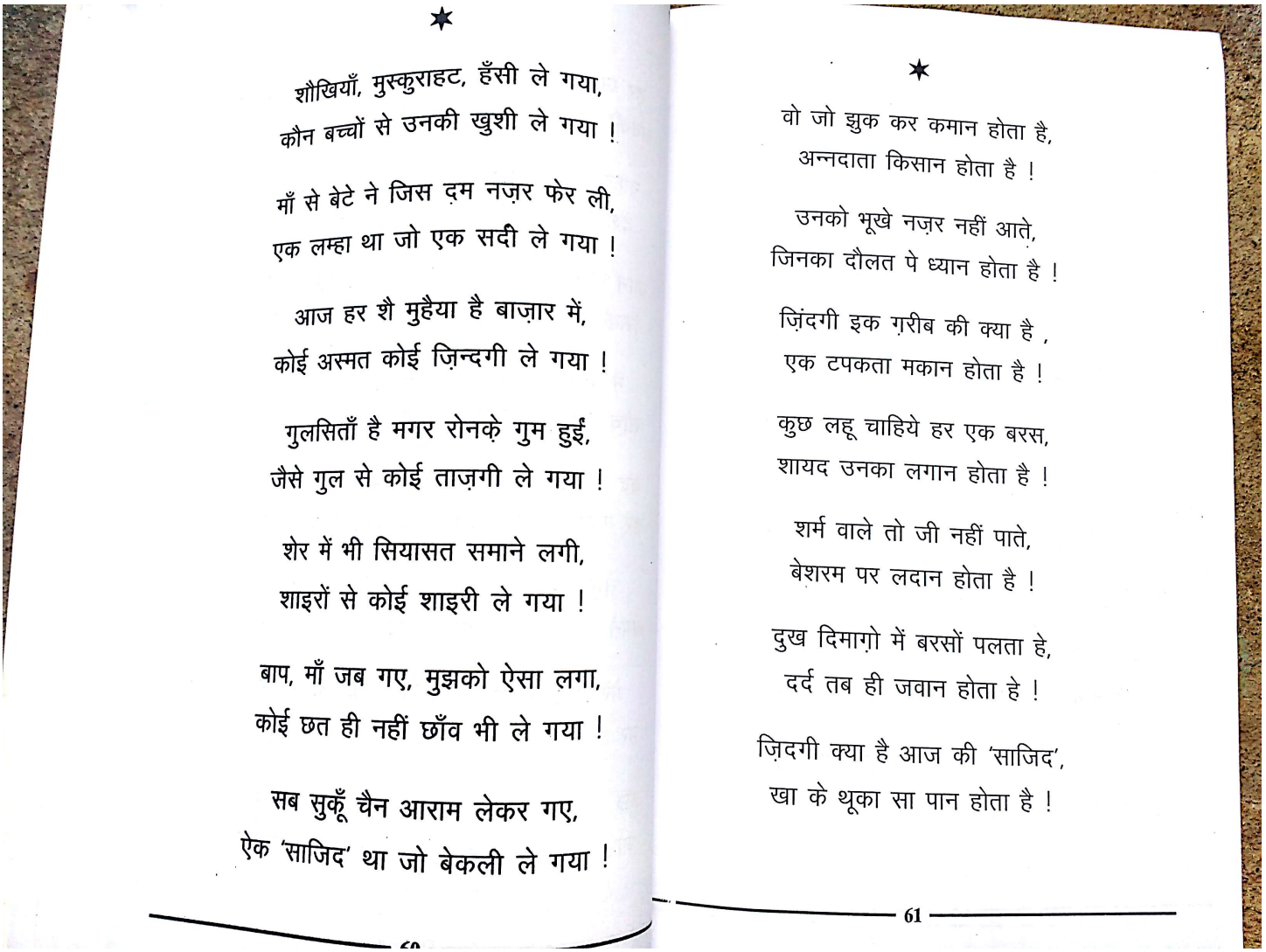

★

शौखियाँ, मुस्कुराहट, हँसी ले गया,
कौन बच्चों से उनकी खुशी ले गया !

माँ से बेटे ने जिस दम नज़र फेर ली,
एक लम्हा था जो एक सदी ले गया !

आज हर शै मुहैया है बाज़ार में,
कोई अस्मत कोई ज़िन्दगी ले गया !

गुलसिताँ है मगर रोनक़े गुम हुईं,
जैसे गुल से कोई ताज़गी ले गया !

शेर में भी सियासत समाने लगी,
शाइरों से कोई शाइरी ले गया !

बाप, माँ जब गए, मुझको ऐसा लगा,
कोई छत ही नहीं छाँव भी ले गया !

सब सुकूँ चैन आराम लेकर गए,
ऐक 'साजिद' था जो बेकली ले गया !

★

वो जो झुक कर कमान होता है,
अन्नदाता किसान होता है !

उनको भूखे नज़र नहीं आते,
जिनका दौलत पे ध्यान होता है !

ज़िंदगी इक ग़रीब की क्या है ,
एक टपकता मकान होता है !

कुछ लहू चाहिये हर एक बरस,
शायद उनका लगान होता है !

शर्म वाले तो जी नहीं पाते,
बेशरम पर लदान होता है !

दुख दिमाग़ो में बरसों पलता हे,
दर्द तब ही जवान होता हे !

ज़िदगी क्या है आज की 'साजिद',
खा के थूका सा पान होता है !

✶

अलसाये से उकताए से, दर दर हैं गर्मी के दिन,
धूप बदन पर ख़ूब लपेटे, घर घर हैं गर्मी के दिन !

छतवाले तो घर में रहकर जैसे तेसे काट रहे,
जो बेघर हैं, बेछत हैं जो, उन पर हैं गर्मी के दिन !

महलों में तो हर दिन बारिश हर पल रंग बहारों का,
और ग़रीबों के घर में तो, अक्सर हैं गर्मी के दिन !

बूढ़ों का साया ऐसा था जेसे बरगद का साया,
अब तो ऐसा लगता जैसे, सर पर हैं गर्मी के दिन !

पहचानो पानी की क़ीमत जानो राज़ बहारों का,
यूं मानो तो सचमुच अपने, रहबर हैं गर्मी के दिन !

किससे मांगे, केसे मांगे पानी भी अनमोल हुआ,
जिसको देखो वो प्यासा है, हर घर हैं गर्मी के दिन !

'साजिद' सच्ची बातें कहना, कितना मुश्किल होता है,
जब बोले तो हमने पाया, हम पर हैं गर्मी के दिन !

✶

चैन कम है, बेकली भरपूर है,
ज़िंदगानी का यही दस्तूर है ।

कुछ परिन्दे आ रहे हैं लौटकर,
पत्ता, पत्ता पेड़ का मशकूर है ।

इस तरह रिसते रहे हैं रोज़ो शब,
ज़िंदगी जैसे कोई नासूर है ।

आज फिर आँखों में है अश्कों की भीड़,
आज फिर ये दिल बहुत मजबूर हैं।

शाइरी का रंग 'साजिद' खिल गया
शाइरो मे शाइरी का नूर है ।

✶

सीधी सादी प्यारी प्यारी भोली भाली माताजी,
मेरे जीवन के उपवन की हैं रखवाली माताजी !

सुनते हैं भगवन का दर्जा माताश्री को होता है,
भगवन को तो न देखा पर देखी भाली माताजी !

बूढा हूँ पर बच्चों जैसा अक्सर मैं हो जाता हूँ,
याद मुझे जब आ जाती हैं 'मैली प्याली' माताजी !

जिसने तेरी बात को माना जग में वो ज़ीशान हुआ,
जिसने तेरे पाँव दबाए जन्नत पा ली माताजी !

माता के गुणगान में 'साजिद' भारत माता शामिल है,
मुझको अपनी गोद संभाला कितनी आली माताजी !

✶

क्या पाने की आस रे जोगी,
सब कुछ तेरे पास रे जोगी !

उक़्बा की तैयारी कर लो,
दुनिया तो बकवास रे जोगी !

पत्थर बनना क़िस्मत है तो,
बन जाओ अल्मास रे जोगी !

इक दिन अंबर को पा लेगी,
धरती को विश्वास रे जोगी !

निर्धन हे तो आम कहावे,
दौलत वाला ख़ास रे जोगी !

उनके ग़म में मेरे आंसू,
ये कैसा अहसास रे जोगी !

पी लेने से बढ़ जाती है,
ये उल्फ़त की प्यास रे जोगी !

लफ़्ज़ों के जंगल ने बख़्शा,
ग़ज़लों को बनवास रे जोगी !

जो दिखता हे वो लिखता है,
'साजिद' तो बिंदास रे जोगी !

✶

पिरो कर लफ़्ज़ को माला बनाओ तो ग़ज़ल होगी,
ख़यालो को करीने से सजाओ तो ग़ज़ल होगी !

तुम्हारे जिस्म से होकर हमारे शेर गुज़रेगें,
खड़े क्यूँ दूर हो नज़दीक आओ तो ग़ज़ल होगी !

तुम्हारे रुख़ को दिन और जुल्फ़ को हम रात कहते हैं,
इसी अहसास को तुम गुनगुनाओ तो ग़ज़ल होगी !

तुम्हारा ये सरापा मेरी चश्मे नम में बसता है,
मेरी नज़रों से नज़रें तुम मिलाओ तो ग़ज़ल होगी !

ये सांसें चंद दिन की, जिंदगी है नाव काग़ज़ की,
इसी कश्ती को पानी में चलाओ तो ग़ज़ल होगी !

सहारा दो किसी बूढ़े को तो अशआर होते हैं,
किसी बच्चे को रोते से हंसाओ तो ग़ज़ल होगी !

कभी सूरज से लेकर इक किरन अशआर को दे दो,
कभी अल्फ़ाज़ को चंदा बनाओ तो ग़ज़ल होगी !

नये अंदाज़ में 'साजिद' तुम्हारी बात करता है,
इसी अंदाज़ को अपना बनाओ तो ग़ज़ल होगी !

✶

कभी तन्हाई को तरसे कभी मेहफ़िल नहीं आई,
सफ़र मे ज़िन्दगी गुज़री कोई मंज़िल नहीं आई !

मैं अपने दोस्तों की ख़ैर को लेकर परीशाँ हूँ,
बहुत अरसा हुआ घर मे कोई मुश्किल नहीं आई !

मुकद्दर से मेरी बैचेनियों ने रतजगा पाया,
घड़ी भर नींद आ सकती थी पर ऐ दिल नहीं आई !

बुज़ुर्गो की दुआ लेकर के मैं ख़तरात से गुज़रा,
सफ़र अच्छा रहा ओर राह में मुश्किल नहीं आई !

मैं अपनी जाँ हथैली पर लिये तकता रहा 'साजिद',
तुम्हारी मुस्कुराहट और मेरी क़ातिल नहीं आई !

✶

आज हूं मैं न कल रहा हूँ मैं,
चंद लम्हों में ढल रहा हूँ मैं !

मैं दिवाना जो खुद नहीं बदला,
और दुनिया बदल रहा हूँ मैं !

मेरे अजदाद हैं मेरे रहबर,
उनके क़दमो पे चल रहा हूँ मैं !

तुमसे अहसास की तपिश लेकर,
लम्हः लम्हः पिघल रहा हूँ मैं !

मैं कभी हूँ सवाल की सूरत,
कुछ सवालों का हल रहा हूँ मैं !

ज़ीस्त की राह है बड़ी मुश्किल,
गिर गया या संभल रहा हूँ मैं !

मैं वो बच्चा जो ख़ुद से रुठ गया,
मुझमें अक्सर मचल रहा हूँ मैं !

गर्म साँसों ने छू लिया 'साजिद',
मैंने पाया के जल रहा हूँ मैं !

✶

क्या तुम मेरा साथ न दोगे,
इन हाथों में हाथ न दोगे !

हर पल रहती याद तुम्हारी,
फ़ुरसत के लम्हात न दोगे !

कब बख़्शोगे ग़म के तुहफ़े,
क्या हमको सदक़ात न दोगे !

आ जाए जीवन में रोनक़,
क्या ऐसे हालात न दोगे !

तुम बिन जीवन उमस भरा है,
तपते को बरसात न दोगे !

'साजिद' पत्थर दिल दुनिया को,
उल्फ़त के जज़्बात न दोगे !

★

सहमा सहमा सहमा है,
तन्हा तन्हा तन्हा है !

इन आँखों नें उनका जलवा,
देखा देखा देखा है !

अपने घर में अपना दुश्मन,
अपना अपना अपना है !

ग़म मेरे आँगन में आकर,
रहता रहता रहता है !

आँखें हैं फिर भी क्यो इंसाँ,
अंधा अंधा अंधा है !

तू मंज़िल है ओर ये 'साजिद',
रस्ता रस्ता रस्ता है !

★

सहमी सहमी डरती डरती अलसाई अलसाई रात,
दिन के बादल ने धरती पर बरसाई बरसाई रात !

दिन भर थककर ओढ़ चदरिया अक्सर यूँ सो जाती है,
जैसे मेहनत ओर मजूरी कर आई कर आई रात !

फटे हुए क़पड़ों में अपना मटयाला तन ले आई,
सब रोशन रोशन महलों से उकताई उकताई रात !

गोरे गोरे इंसानो के काले चेहरे देख डरी,
नाम उजालों का सुन सुन कर घबराई घबराई रात !

जिस्मों की बेबाक नुमाइश मयनोशी ओर बेशर्मी,
तारीकी में भी दिखती हे शरमाई शरमाई रात !

'साजिद' मेने जब भी दिन को शाम सजाकर बिदा किया,
होले होले छुपते छुपते, घर आई घर आई रात !

★

सोच बदला करे है पतों की तरह,
ज़िंदगी है भटकते ख़तों की तरह !

जबसे किरदार पल पल बदलने लगा,
लोग लगने लगे आफ़तों की तरह !

कैसे आती ख़ुशी की सुहानी फ़ज़ा,
राह मे ग़म खड़े परबतों की तरह !

मंजिलों को न मिलना था, वो न मिलीं,
हम भटकते रहे मुद्दतों की तरह !

तुम भी 'साजिद' तलाशो सहेजो इसे,
ज़िंदगी गुम चुकी चाहतों की तरह !

★

आप जब से ख़फ़ा हो गए हो गए,
रात दिन बेमज़ा हो गए हो गए !

आपके बिन मसर्रत सितम हो गई,
पल ख़ुशी के सज़ा हो गए हो गए !

देख के आपको यूँ शिफ़ा मिल गई,
आप दिल की दवा हो गए हो गए !

झेलकर सख़्तियां आज के आदमी,
देखिये बुतनुमा हो गए हो गए !

मुस्कुराकर मुजस्सम हया हो गए,
प्यार के हक़ अदा हो गए हो गए !

आप हैं भी नहीं और मौजूद भी,
आप तो मोजिज़ा हो गए हो गए !

गीत 'साजिद' तुम्हारे, तुम्हारी ग़ज़ल,
ज़िंदगी की सदा हो गए हो गए !

★

जुनूँ के दोर मे अपनी कहानी कौन लिखता है,
नये माहौल में बातें पुरानी कौन लिखता है !

कहीं लिख्खी अदावत हे कहीं चस्पाँ शिकायत है,
मुहब्बत ही तो थी अपनी निशानी कौन लिखता है !

मरे हें तो हर इक अख़बार की सुर्ख़ी बने हैं वो,
मगर गुज़री है कैसे ज़िंदगानी कौन लिखता है !

थे वो बच्चे तो कच्चे थे, हुए बूढ़े तो कूड़े हैं,
कहाँ पे खप गई उनकी जवानी कौन लिखता है !

है लाज़िम अब ग़ज़ल मे प्यार की ख़ुशबू रहे 'साजिद',
वगरना आजकल बातें सयानी कौन लिखता हे !

★

आँसुओं की बरसातें कब किसी से मिलती हैं,
ज़िंदगी को सौग़ाते ज़िदगी से मिलती हैं !

मैनें कब कहा ऐसा, आप क़त्ल करते हैं,
क़ातिलों की कुछ बातें आप ही से मिलती हैं !

मैने होश भी अक्सर, उस गली में खोया है,
आपकी इनायातें जिस गली से मिलती हैं !

जिस के दम से गुलशन को रौनक़ें मयस्सर हैं,
आपकी कई बातें उस कली से मिलती हैं !

शाइराना फ़ितरत तो हम पे हे मेहर 'साजिद',
लफ्ज़ियाना सोग़ातें शाइरी से मिलती हैं !

✶

शरमाई शरमाई अंखियाँ,
दानाई दानाई अंखियाँ !

बेग़ानी बेगानी सखियाँ,
घबराई घबराई अंखियाँ !

ऊँचे ऊँचे महलों नीचे,
पथराई पथराई अंखियाँ !

शातिर शातिर शातिर दुनिया,
इतराई इतराई अंखियाँ !

'साजिद' गीतों की ग़ज़लों की,
गहराई गहराई अंखियाँ !

✶

न दुश्मनी न अदावत न डाँटने वाला,
यहां रिवाज हे ख़ुशियों को बाँटने वाला !

हे साफ़गोई कहा जो वही किया हमने,
बुरा ये काम हे थूके को चाटने वाला !

वो चाह कर भी जुदा कर सका न हम सबको,
बड़ा उदास हे टुकड़ों में बाँटने वाला !

लगी जो धूप, बढ़ी प्यास तो वो पछताया,
वग़र्ना ख़ुश था हरा पेड़ काटने वाला !

वो नापसंद, जो आपस में खाइयाँ कर दे,
हमें पसंद है, खाई को पाटने वाला !

ये बाग़े हिन्द फले फूले है दुआ 'साजिद',
हमारा शौक़ हो ख़ारो को छाँटने वाला !

★

इश्क़ वाले संभाल कर रखना,
कुछ उजाले संभाल कर रखना !

जाने कब आंधियाँ चली आएँ,
कुछ जियाले संभाल कर रखना !

सच की ताज़ीम भी ज़रुरी है,
मुंह के छाले संभाल कर रखना !

भूख का इम्तिहान होना है,
कुछ निवाले संभाल कर रखना !

चापलूसों की भीड़ है लेकिन,
बात वाले संभाल कर रखना !

जोश के दोर में यहाँ 'साजिद',
होश वाले संभाल कर रखना !

★

गुलशन में जो फूल है साहब,
फ़ितरत में वो शूल है साहब !

बात अमन की करने वाला,
हिंसा में मशगूल है साहब !

दौरे हाज़िर सच लिखना भी,
कुछ लोगों की भूल है साहब !

रोंदोगे तो सर बैठेगी,
ये रस्ते की धूल है साहब !

शहरों के गुलदान में कोई,
मुरझाता बनफूल है साहब !

कम बोलो तो बात बने ना,
लफ़्फ़ाज़ी मक़बूल है साहब !

'साजिद' की कुछ ग़ज़लें सुन लो,
इस युग के मअकूल है साहब !

✶

दर्द इतना बदल गया शायद,
मेरे शैरों में ढल गया शायद !

आ रहे हैं ज़मीं पे तारे भी,
कोई बच्चा मचल गया शायद !

आग इतनी थी मेरे अश्कों में,
उनका दामन भी जल गया शायद !

जिसको किरदार भी बदलना था,
सिर्फ़ कपड़े बदल गया शायद !

उसका रिश्ता ज़मीं से टूट गया,
कुछ ज़ियादा उछल गया शायद !

इक गुलिस्तान था मेरे अंदर,
कुछ निगाहों में खल गया शायद !

प्यार पाकर के कोहे नफ़रत भी,
बर्फ़ जेसा पिघल गया शायद !

मिल गई है दुआ बुजुर्गों की,
अब बुरा वक़्त टल गया शायद !

लफ़्ज़ 'साजिद' बहुत परीशाँ है,
कोई मिस्ले ग़ज़ल गया शायद !

✶

दुनिया का दस्तूर है भाई,
हमको सब मंजूर है भाई !

सुख तो जैसे चाँद सितारा,
हम लोगों से दूर है भाई !

रोने दो बच्चे को, ममता,
थकी हुई है चूर है भाई !

सच्चाई को पा न सकोगे,
अच्छाई मअजूर है भाई !

बदअमनी की नदिया देखो,
कुछ सालों से पूर है भाई !

'साजिद' की ग़ज़लों में शायद,
सच्चाई का नूर है भाई !

★

वो अंधेरो मे रहेंगे या के उजियालों के साथ,
ये परेशानी रही दुनिया मे दिलवालों के साथ ।

उम्र गुज़री पर लबो पे लज्ज़तें बाक़ी रही,
एक लम्हा क्या गुज़ारा आपके गालों के साथ ।

रहगुज़र को चूम लेते हें मेरी वो प्यार से,
कुछ तो रिश्ता है मेरा इन पांव के छालों के साथ ।

फैल जाएं तो अंधेरा ही अंधेरा हर तरफ,
कैसे सूरज चल सकेगा गेसुओं वालों के साथ ।

आओ हम तुम बैठ कर कुछ दर्द की बातें करें,
नाज़ की बातें करेंगे नाज़ के पालों के साथ

सुब्ह होती है तो 'साजिद'उस रुख़े ज़ेबा की बात,
शाम होती है उसी के रेशमी बालों के साथ ।

★

जो अंदर है बाहर भी है,
मुझमें पिन्हा मंज़र भी है !

ऐक बूँद है आंसू की जो,
ख़ुद में एक समन्दर भी है !

अपना बोझा ख़ुद ढोना है,
इंसा ख़ुद का चाकर भी है !

दौलत कम से कम रहती है,
अपनी छोटी गागर भी है !

आ जाती हैं यादें अक्सर,
तन्हा हूँ पर लश्कर भी है !

क्योंकर पाँवों को फैलाएँ,
अपनी छोटी चादर भी है !

ज़ालिम लोगों इतना सोचो,
इस धरती पे अंबर भी है !

सादा हैं ग़ज़ले 'साजिद' की,
मतलब लेकिन हटकर भी है !

★

मैनें सोचा ही न था ये मोअजज़ा हो जाएगा,
वो वफ़ा का ज़िक्र करके बेवफ़ा हो जाएगा !

मुस्कुराकर देख तो लेते हैं वो मेरी तरफ़,
सोचते ये भी नहीं हें दिल का क्या हो जाएगा !

वो न आते हैं तो जेसे नींद भी आती नहीं,
याद से बातें करुंगा रतजगा हो जाएगा !

बुर्ज महलों के करेंगें ख़ुद ब ख़ुद झुक कर सलाम,
जब कभी कुटिया में पैदा होसला हो जाएगा !

जुल्मतो की आग को बुझना पड़ेगा एक दिन,
सब्र का ख़ाली पियाला जब भरा हो जाएगा !

ऐक होकर गाड़ देंगें आसमानों पर निशाँ,
बट गए तो ये पता भी लापता हो जाएगा !

हमसे सीखी है जहाँ ने चाँद तारों की रविश,
हम बनें रहबर तो दुनिया का भला हो जाएगा !

वो ग़ज़ल में बस गए है। बन के मफ़हूमे ग़ज़ल,
ज़िक्र उनका लब पे 'साजिद' शेर सा हो जाएगा !

★

बादलों तुम मेरी आँखों में उमड़ते क्यों हो,
दर्द अहसास है अहसास से लड़ते क्यों हो !

छोड़कर अपनी अना बात करो साहिल की,
डूब जाओगे समन्दर से अकड़ते क्यों हो !

कुछ तो माली के भरोसे की भी ताज़ीम करो,
गुलशनों की तरह हर बार उजड़ते क्यों हो !

अपनी साँसों में बसाओ उन्हें महसूस करो,
लड़खड़ाओगे हवाओं को पकड़ते क्यों हो !

बात अच्छी है तो ख़ुशबू की तरह फैलाओ,
अपने महदूद ख़यालों में सुकड़ते क्यों हो !

आओ बतलाएंगें 'साजिद' ये हक़ीक़त उनको,
हम सभी भाई हैं आपस में झगड़ते क्यों हो !

✶

मुझ से मेरा ही ठिकाना चाहती है,
उनकी उल्फ़त घर बसाना चाहती है !

अपने दिल में प्यार के दीपक जला लो,
ज़िन्दगानी जगमगाना चाहती है !

गुलशने इंसानियत में मेरा दिल,
ऐक चिड़िया है जो दाना चाहती है !

मुश्किलें आफ़ात ही क्या बेबसी तक,
मुझसे मिलने को बहाना चाहती है !

आग ज़हनो की बुझा दीजे वग़रना,
अब ये बस्ती को जलाना चाहती है !

होस्ले का ख़ौफ़ ऐसा छा गया है,
खुद ही दूरी पास आना चाहती है !

कब से 'साजिद' सो रहा है इंक़लाब,
शाइरी उसको जगाना चाहती है !

✶

क्या बतलाएं तन्हाई में कैसा होता है,
उनकी यादों का इस दिल में मेला होता है !

मन की बातें आंखें ख़ुद ही बतला देती हैं,
दीवारों से दर का रिश्ता गहरा होता है !

फ़ुरक़त के लम्हे भी कितने भारी होते हैं,
मेहफ़िल में भी इंसा कितना तन्हा होता है !

जीवन की राहों से लाखों गुज़रा करते हैं,
कितने ऐसे हैं के जिनका चर्चा होता है !

कहने को तो इज़्ज़त सबको जां से प्यारी है,
पर अस्मत का बाज़ारों में सौदा होता है !

कुर्बानी की ख़ुशबू अक्सर महका करती है,
जाँ दे देना भी तो ऐसे जीना होता है !

आहो ज़ारी से क्या होगा, वह क्या पिघलेगा,
दानव बनकर इंसाँ अक्सर बहरा होता है !

अपने मन की बात बताना इस जग मे आसान नहीं,
सच वाली हर ऐक जुबाँ पर पहरा होता है !

उसने ये कहकर बच्चे से उसका जीवन छीन लिया,
हर मरने वाला इक माँ का बेटा होता है !

ग़म की शिद्दत का अंदाज़ा अश्कों से नामुमकिन है,
क़तरे में भी 'साजिद' अक्सर दरिया होता है !

★

मंज़िले मंज़िले खो गईं रहगुज़र रहगुज़र खो गए,
ज़िंदगानी तेरी राह में सैकड़ों हमसफ़र खो गए !

दिल की हमदर्दियां खो गई भाईचारा ख़तम हो गया,
बस इमारत ही मौजूद है, अस्ल में अपने घर खो गए !

उल्फ़तों को समेटा करो वरना ये भी चली जाएगीं,
दिल में लोगों के वो आग है, जिसमें गाँव ओ नगर खो गए !

वक़्त है अहतरामन झुको, दिल में चाहत को ताज़ा रखो,
सल्तनत पे न मग़रुर हो,जान लो ताजवर खो गए !

अब अदब, बे अदब हो गया और क़लम खुद कलम हो गई,
बस इबारत ही मौजूद है उसके ज़ैरो ज़बर खो गए !

जुल्म की भेट चढ़ते गए और 'साजिद' बिछुड़ते गए,
शम्स कितने बुझाए गए और कितने क़मर खो गए !

★

आज के इस दौर में बातें नई करने लगे,
राहज़न देखो हमारी रहबरी करने लगे !

वक़्त ने थोड़ा उछाला तो ये अंदाज़ा हुआ,
नाअहल भी आसमाँ की हमसरी करने लगे !

चांद सूरज की ज़िया भी उनके घर को कम लगी,
लोग बस्ती को जला कर रोशनी करने लगे !

नोंच डाला बरहमी से ऐक इंसानी बदन,
जानवर का काम अब के आदमी करने लगे !

बेवफ़ाई को मिला तमग़ा हमारे दौर में,
बावफ़ा जो थे वो अक्सर ख़ुदकुशी करने लगे !

शायरों की बात करना भी जिन्हें दुश्वार था,
अब तो 'साजिद' लोग ऐसे शाइरी करने लगे !

✶

बेवफ़ाई तेरा दस्तूर रहा है जानां,
फ़िर भी हमने कोई शिक़वा न किया है जानां !

ऐक तुम हो के हमें भूल गई हो कब से,
ऐक हम हैं के सदा याद किया है जानां !

तेरी यादों से सजाया है सदा अपना जहां,
मैंने हर लम्हे को ऐसे भी जिया है जानां !

कोई शिक़वा नहीं मुझको न गिला है तुमसे,
मेरा मेहबूब शिकायत से सिवा है जानां !

तेरी यादें मेरे लफ़्ज़ों को तरन्नुम बख़्शें,,
आज 'साजिद' तेरी फ़ुरक़त से मिला हे जानाँ !

✶

जिंदगी की हर मसर्रत को दोबाला कर दिया,
आप आए मेरे घर मे, और उजाला कर दिया !

मैं तो मोती की तरह बिखरा हुआ था हर तरफ,
आपने मुझको पिरोया और माला कर दिया !

झांक लेता तो हूं मैं अपने गरेबाँ की तरफ,
मुझको मुझ से ही मिला कर आँख वाला कर दिया !

आज फिर सच बोलने की मैंने जुरअत की मगर,
आज फिर मैरी ज़बाँ पर उसने छाला कर दिया !

अब अमीरों को सियासत मे मज़ा आने लगा,
और लज़्ज़त ने ग़रीबों को निवाला कर दिया !

ज़िन्दगी गाई है 'साजिद' ने ग़ज़ल की शक़्ल में,
फ़न को मालिक ने मुहब्बत का मक़ाला कर दिया !

★

लज़्ज़तें चाहतें प्यार ही प्यार है,
शाइरी का अलग अपना संसार है !

जिस्म में, रुह में तेरी मेहकार है,
तू रबे दो जहाँ का चमत्कार है !

तेरा दर छोड़कर कोई जाएगा क्या,
बेड़ियां हैं नहीं पर गिरफ़्तार है !

है निराला सनम तेरी फ़ुरक़त का ग़म,
मर्ज़ है भी नहीं और बीमार है !

हालते वज्द भी तुझको भूला नहीं,
तेरा दीवाना भी कितना हुश्यार है !

मंज़िले इश्क़ आसां नहीं हे वहां,
संग ही संग हैं दार ही दार है !

रात दिन प्यार की हों अज़ाने यहां,
मस्जिदों की तरह दिल की मीनार है !

तुम सुख़न हो मिरे तुम मेरी सोच हो,
और 'साजिद' तुम्हारा तलबगार है !

जीवन परिचय

नाम	:	साजिद हाशमी
पिता का नाम	:	मुहम्मद हयात हाशमी
जन्म दिनांक	:	07 जनवरी 1955
सर्विस	:	शासकीय सेवा, म0प्र0शासन,राजस्व विभाग
पैदाइश	:	राजगढ़, ब्यावरा म0प्र0
पता	:	नवीन कालोनी,राजगढ़
मोबाइल नं.	:	9425660027

तस्नीफातः—एक मजमूआ 'किलकारियां' मंज़रे आम पे आ चुका है, आकाशवाणी और दूरदर्शन के अलावा अख़बारों व मेगज़ीन्स मे गीत व ग़ज़ले शाया हुई हैं ।

'चाँद ज़मीं पर उतरेगा' एक ऐसे शायर का मजमूआ है जो मध्यप्रदेश के उस इलाक़े से ताल्लुक़ रखता है, जहाँ उर्दू शेरो अदब की कामरानियों का तसव्वुर मुहाल है। साजिद हाशमी के जज़्बातो एहसासात की क़द्र करना होगी कि उन्होंने शेरो सुख़न की लौ उस जगह रोशन की है, जहाँ अदब की तहज़ीब के उजाले नई सुबह की आमद के मुन्तज़िर थे, सो साजिद हाशमी के मजमुऐ कलाम 'चाँद ज़मीं पर उतरेगा' के ज़रिए से अब नई उम्मीदें जागी हैं। साजिद हाशमी की शायरी ज़िंदगी की रूमानवियत ही से वाबस्ता नहीं बल्कि ज़िंदगी की हक़ीक़तों की भी आईनादार है।

- डॉ. मुख़्तार शमीम

साजिद हाशमी को शायरी विरासत में मिली है कि उनके वालिद मोहम्मद हयात हाशमी मशहूर शायर थे। यही वजह है कि साजिद हाशमी की शायरी में ज़बान की सफाई और सादगी नुमायाँ है। साजिद हाशमी ने गहरे और मुफक्करामा अंदाज से ग़ुरेज़ करते हुए सादा और आम फ़हम ज़बान को अपना वसीलाऐ इज़हार बनाया और कामयाब हुए। उन्होंने अपनी शायरी में इश्क़िया ज़ज़्बात से लेकर समाज में फैली हुई बुराईयों पर भी नज़र रखी है। इसी वजह से उनकी शायरी पुरअसर है।
'चाँद ज़मीन पर उतरेगा' उनका पहला शेरी मज़मूआ है, जो देवनागरी में शाये हो रहा है। मुझे यक़ीन है कि साजिद हाशमी अपने वालिदे मरहूम मोहम्मद हयात हाशमी की तरह शेरो अदब में जल्द ही अपना मक़ाम हासिल कर सकेंगे।

-डॉ. सैफी सिरोंजी